हमारा परमेश्वर प्रकट होने वाला है

एक महत्वपूर्ण अर्थ में, परमेश्वर छुपा नहीं रह सकता। उसका अस्तित्व उसे प्रकट कर ही देता है। उसका स्वभाव सृजनात्मक होने के कारण, सृष्टि भी अपने सृजनहार को प्रकट करती है। जीवों के रूप में हमारा अपना अस्तित्व सृष्टि का प्रमाण है।

कुछ वर्ष पूर्व मुझे वेटिकन में सिस्टाइन चैपल में खड़े होकर छतों पर की गई अद्‌भुत लेपचित्रकारी की तारीफ करने का रोमांचकारी अवसर प्राप्त हुआ था। मैं हैरान होकर सोच रहा था कि कला का इतना सुन्दर काम किसी ने कैसे किया होगा, परन्तु मुझे इसमें कोई हैरानगी *नहीं* थी कि किसी ने यह काम किया था! उन सुन्दर चित्रों से पता चल रहा था कि किसी ने उन्हें बनाया है। स्तब्ध करने वाले उन चित्रों में, मुझे उन्हें बनाने वाले कलाकार का चरित्र भी दिखाई दिया। मुझे अहसास हुआ कि इस काम को पूरा करने के लिए बहुत लम्बा अरसा लगा होगा। इसके लिए बहुत धैर्य (लगभग साढ़े चार वर्ष के बराबर) की आवश्यकता थी। असाधारण निपुणता तो दिखाई दे ही रही थी। इस कार्य में अनुभव तथा अनुपात का उत्कृष्ट ज्ञान दिखाई दे रहा था। स्पष्ट था कि उसमें शारीरिक सहनशक्ति भी आवश्यक थी। संक्षेप में, यह केवल पूर्वनिश्चित निर्णय ही नहीं था कि ऐसे कलात्मक कार्य के लिए कलाकार की आवश्यकता होती है; उस सर्वोत्तम रचना से मुझे समझ आई कि सबसे बड़े कलाकार में क्या-क्या योग्यताएं होनी आवश्यक हैं।

सृष्टि में भी ऐसा ही कुछ है। यह सृष्टि किसी का भव्य परन्तु साधारण प्रकटीकरण है। इसके सामान्य प्रकाशन में, हम सृष्टिकर्त्ता के अस्तित्व के ''केवल'' तथ्य से अधिक की समीक्षा कर सकते हैं। सृष्टिकर्त्ता के ''चरित्र'' के बारे में भी हम थोड़ा-बहुत जान सकते हैं। उदाहरण के लिए, दाऊद ने यह अवलोकन किया था, जो पहले ही बड़ा समर्पित होकर परमेश्वर पर विश्वास रखता था: ''आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है'' (भजन 19:1)। परमेश्वर की हस्तकला में दाऊद ने उसकी महिमा देखी। आज हम संसार की विशालता और यथार्थता पर हैरान होते हैं जिससे हमारी सौर्य प्रणाली काम करती है। वास्तव में, हम अपनी घड़ियों तथा कैलेण्डरों को देखकर इस सुस्पष्ट व्यवस्था पर निर्भर करते हैं। हम दिन और रात तथा मौसम के बदलने की व्यवस्था को जानते हैं। खगोलशास्त्री हमें उन ग्रहों की स्थिति के विषय में बताते हैं जो हमारे सूर्य के इर्द-गिर्द घूमते हैं और जहां भविष्य में कभी हमारी पृथ्वी पर

ग्रहण लगेंगे। हां, उस सृष्टिकर्त्ता की महिमा, महानता तथा व्यवस्था के बारे में हमें उसकी सृष्टि का अध्ययन करने पर कुछ ज्ञान मिलता है।

एक और महत्वपूर्ण अर्थ में, परमेश्वर हमसे छुपा हुआ है। सृष्टि में हमें एक सृष्टिकर्त्ता के *तथ्य* और सृष्टिकर्त्ता के निश्चित ''चरित्र के गुण'' दिखाई देते हैं। परन्तु, जैसे सिस्टाइन चैपल के चित्रों से यह पता नहीं चलता कि उन्हें किसने बनाया, वैसे ही सृष्टि हमें स्वयं नहीं बताती कि उसका बनाने वाला *कौन* है। मुझे चित्रों को देखकर नहीं बल्कि पुनर्जागरण युग के दौरान इटेलियन आर्ट के इतिहास को पढ़कर और उसका अध्ययन करके पता चला कि मिचलेंजलो ने उन चित्रों को बनाया था। इसी प्रकार, बाइबल को पढ़कर और उसका अध्ययन करके जो कि *परमेश्वर* का विशेष प्रकाशन है, हम ढूंढ़ पाते हैं कि इस संसार, अर्थात हमारे संसार को और हमें बनाने वाला कौन है। बाइबल में हम पाते हैं कि *वह* सबसे बड़ा वास्तुकार है। पवित्र शास्त्र की सहायता के बिना न तो मुझे और न ही आपको पता चल सकता था कि वह सृष्टिकर्त्ता कौन है।

यही कारण है कि परमेश्वर के विषय में विचार करते हुए हमने बाइबल का इस्तेमाल बड़ी सावधानी से किया है। सृष्टिकर्त्ता के *तथ्य* और उस सृष्टिकर्त्ता की कुछ विशेषताओं को तय करने के लिए सामान्य प्रकाशन (प्रकृति) हमारा सहायक होता है, परन्तु उस सृष्टिकर्त्ता को बाइबल के परमेश्वर के रूप में पहचानने के लिए हमें पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ना पड़ता है। हमने अपने लोगों के इतिहास में उसके अपने आपको प्रकट करने के रूप में सामर्थ के उसके कामों का भी अध्ययन किया था। परन्तु इतिहास में उसकी संलिप्तता का महत्व उसके सदाचारी स्वभाव में था। यह महान सच्चाई बाइबल में ही मिलती है, जगह-जगह बिखरे उसके कार्यों से नहीं। इसलिए हमारे पास एक छिपा हुआ और प्रकट परमेश्वर है। वह तब तक छिपा हुआ है जब तक वह प्रकृति (सृष्टि) और बाइबल में प्रकट नहीं होता, और तब भी केवल उतना ही प्रकट होता है जितना वह अपने आपको प्रकट करना चाहता है।

बात करने के द्वारा प्रकट हुआ

बाइबल परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से प्रकट होते दिखाती है। उसने इब्राहीम, इसहाक, याकूब, मूसा, शमूएल, नातान, यहेजकेल आदि से बात की थी।[1] उनके साथ उसका यह सम्प्रेषण उन पर उसकी इच्छा प्रकट करने के लिए था। वह चाहता था कि उसके लोगों की अगुआई सही ढंग से हो। इसमें ऐतिहासिक तथ्यों से भी अधिक बातें शामिल हैं। उनके बीच में उसके कार्यों के तर्क का आधार और उनसे उसका सम्बन्ध उसके प्रकाशन में सर्वोच्च थे। इसलिए, सुरक्षा, अगुआई, सम्भाल, और मेल देने वाले परमेश्वर के चित्रण के लिए उसके कार्य और उसकी बातों को मिला लिया गया। उसकी इच्छा उस संदर्भ से बाहर प्रकट की गई थी।

अपनी वाचा में प्रकट हुआ

समस्त विस्तारों के साथ, वाचा उनके लिए परमेश्वर की दिलचस्पी का मुख्य आकर्षण

थी। वह वाचा लोगों द्वारा प्रकृति का अध्ययन, इतिहास का विश्लेषण या पड़ोसी देशों के कानून की कुछ बातों से नहीं मिली थी।[2] यह प्रत्यक्ष रूप से सीनै पर्वत पर मूसा को ''दस आज्ञाएं'' देकर परमेश्वर की ओर से दी गई थी।[3]

अपने कामों तथा बातों में प्रकट हुआ

परमेश्वर युगों-युगों तक अपने लोगों में अपने आपको अपने कामों तथा बातों से प्रकट करता रहा। उसके कार्यों से उसकी सामर्थ का प्रकटीकरण हुआ। उन कार्यों का उद्देश्य बताते हुए, उसकी बातें *उन* पर प्रकट की गई थीं।[4] यह सब आने वाली पीढ़ियों के लाभ के लिए लिख दिया गया।[5] लोगों को उन लिखी गई बातों की ओर ध्यान देने, उनमें न कुछ जोड़ने और न ही कुछ कम करने की चेतावनी दी गई थी।[6]

परमेश्वर को प्रकट करते उसके काम तथा बातें अपने लोगों से उसके सम्बन्ध के लिए आवश्यक थीं। यदि वह काम न करता, तो उन्हें उसकी सामर्थ का पता नहीं चलना था। यदि वह बात न करता, तो उन्हें उसकी इच्छा का पता नहीं चलता। यदि यह ''उद्धार का इतिहास'' लिखा न जाता, तो उन्हें यह याद नहीं रहता। याद भी रहता, तौ भी वे इसे अपने से अलग कर लेते। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि उनके महान अगुओं में से एक ने कहा था,

> ... यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़, मेरा छुड़ानेवाला, मेरा चट्टान रूपी परमेश्वर है, जिसका मैं शरणागत हूं, मेरी ढाल, मेरा बचानेवाला सींग, मेरा ऊंचा गढ़, और मेरा शरण स्थान है, हे मेरे उद्धारकर्त्ता, तू उपद्रव से मेरा उद्धार किया करता है (2 शमूएल 22:2, 3)।

भविष्यवक्ताओं में प्रकट हुआ

परमेश्वर का महानतम और सम्पूर्ण प्रकाशन अभी आने वाला था। परमेश्वर के भविष्यवक्ता वह माध्यम थे जिनके द्वारा उसकी इच्छा और योजनाएं प्रकट की गई थीं। सीनै पर्वत पर दी गई वाचा के आधीन रहते हुए, वे आने वाली एक नई वाचा की बात करते थे। यिर्मयाह ने इस वाचा का वर्णन करते हुए इसके मूल, इसकी प्रकृति, और इसे पाने वालों के लिए इसके लाभदायक परिणामों के बारे में बताया:

> फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बान्धी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, ... मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। और तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर

> बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा (यिर्मयाह 31:31-34)।

परमेश्वर के नबियों में एक को छोड़कर मूसा के जैसा कोई दूसरा भविष्यवक्ता नहीं था (व्यवस्थाविवरण 34:10-12)। मूसा ने एक नबी के आने की बात की थी जिसने उसके जैसा ही होना था। लोगों के लिए उसकी बात सुनना आवश्यक था, क्योंकि उसने परमेश्वर की बातें उन्हें बतानी थीं (व्यवस्थाविवरण 18:15-19)।

अपने पुत्र में प्रकट हुआ

बाद में इस भविष्यवक्ता को दुख सहने वाला मसीह, यीशु (प्रेरितों 3:17-26), धर्मी जिसे मरने के लिए दे दिया गया (प्रेरितों 7:52, 53), के रूप में पहचान मिलनी थी। क्रूस पर चढ़ने से पहले, वह फसह का भोजन खाने के लिए अपने प्रेरितों से मिला। इस भोज के समय उसने रोटी तथा कटोरे को एक नया अर्थ दे दिया। रोटी के लिए, उसने कहा, ''लो, खाओ; यह मेरी देह है'' कटोरे के लिए, उसने कहा, ''तुम सब इसमें से पियो। क्योंकि यह [नई] वाचा का मेरा वह लहू है जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है'' (मत्ती 26:26-28; मरकुस 14:22-24; लूका 22:19, 20)। अपने बलिदान के द्वारा, वह एक नई और उत्तम वाचा का मध्यस्थ बन गया था। उसने पहली वाचा को जीर्ण कर दिया, परन्तु साथ ही पुराने नियम के अधीन विश्वास से रहने वालों के लिए छुटकारे का मार्ग दे दिया (इब्रानियों 8-10)।

नासरत का यह यीशु परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन है। उसका परिचय यशायाह नबी द्वारा ''इम्मानुएल'' के रूप में दिया गया जिसका अर्थ है ''परमेश्वर हमारे साथ'' (यशायाह 7:14; मत्ती 1:20-23)। इसलिए, अपने लोगों के साथ परमेश्वर के प्रकट होने का सम्बन्ध यीशु अर्थात उसके पुत्र में बुलन्दियों को छू गया।

> हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। जिसे उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया कि उस ने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उस ने अपने आप में ठान लिया था (इफिसियों 1:7-9)।

पाद टिप्पणियां

[1]उत्पत्ति 13:14; 26:2; 28:13; निर्गमन 6:2, 8; 1 शमुएल 3:10; 2 शमुएल 7:4; यहेजकेल 3:22. [2]*एंसियंट नीयर ईस्टर्न टैक्स्ट्स रिलेटिंग टू द ओल्ड टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. अनु. एफ. जी. और थियोफाइल जे. मीके (प्रिंस्टॉन न्यू. ज.: प्रिंसटॉन यूनिवर्सिटी, 1955), 180-88 में जेम्स बी. प्रिचर्ड सं. ''द मिडल असिरीयन लॉज़।'' [3]इब्रानी वाक्यांश *sereth haddbarim* का अर्थ है ''दस बातें''; यूनानी अनुवाद (LXX)

के *hoi deka logoi* का अर्थ है ''दस बातें'' या ''दस आज्ञाएं।'' [4]आरनोल्ड बी. रोडस, द *माइटी ऐक्ट्स ऑफ़ गॉड* (रिचमॉन्ड, Va.: सीएलसी प्रैस, 1964), 12–13. [5]व्यवस्थाविवरण 31:24; यहोशु 1:8; नहेमायाह 8:13, 14; यशायाह 30:8; यिर्मयाह 30:1, 2; इत्यादि। [6]व्यवस्थाविवरण 4:1, 2; नीतिवचन 30:5, 6; मरकुस 11:17; प्रकाशितवाक्य 22:18, 19.